eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 1, Issue 02, June-Dec 2018

भारतीय संगीत मे ताल की उपादेयता

[1]डॉ0 शालिनी त्रिपाठी
[1]एसोसिएट प्रोफेसर संगीत, डी0जी0पी0जी0 कालेज, कानपुर उ0प्र0।

Received: 15 June 2018, Accepted: 15 July 2018, Published on line: 15 Sep 2018

Abstract

नन्ददास के पदो में छन्द–योजना

कृष्ण–भक्त कवियों के छन्द–विधान के प्रति साधारण मान्यता के विपरीत नन्ददास के पदों में भी छन्दों का निश्चित विधान मिलता है। कुछ उदाहरण यहाँ प्रस्तुत किये जा रहे है :–

सारसी छन्द :– इसका प्रयोग कवि ने इस प्रकार किया है :–

नंद कुमार भजन सुखदाइक, पतितन पावन करन।
अतुल प्रताप महामहिम सोभा, सोक ताप अघहरन।
पुष्टि मर्जाद भजन रस सेवा, निज जन पोषन भरन।

शब्द संक्षेप– भारतीय संगीत, तबला, ताल, वादक, उपादेयता।

Introduction

सार छन्द : इसका उदाहरण इस प्रकार है :–

श्री लक्षमन घर बाजत आजु बधाई
पूरन ब्रहमा प्रकट पुरूषोत्तम, श्री बतलभ सुखदाई।।
नायत तरून, वृद्ध, अरू बालक, उर आनंद न समाई।।
जौ जौ जस बन्दीजन बोलत, ब्रिपन बेद पढ़ाई।
हरद दूब अच्छत दधि कुकुंभ, आंगनि कीच मचाई।

चौपाई छन्द :– इसका प्रयोग एक पद में इस प्रकार किया गया है :–

प्रकटित सकल सृष्टि आधार। श्रीमद् बतलभ राजकुमार।
धेय सदा पद अम्बुज सार। अगणित गुण महिमा जु अपार।
धम्मादिक द्वारे प्रतिहार। पुष्टि भक्ति की अंगीकार।
श्री बिट्ठल गिरिधर अवतार, नन्ददास कीन्हों बलिहार।

विष्णुपद :– इसका प्रयोग भी कवि ने अपने पद में किया है :–

श्री गोकुल जुग जुग राज करौ।

या सुख भजन प्रताप तजें, तें, छिन इत उत न टरो।
पवन रूप दिखाइ प्राणपति, पतितन पाप हरौ।

चौपाई :– **राग–धनाश्री**

होतहि ढोटा ब्रज की सोभा, देखों सखि कछु औरहि ओभा।
मालिन सी जहं लक्ष्मी डोले, बंदन माला बाँधति डोले।
बगर बौहारनि अष्ट महासिाधि, द्वारे सथियां पूरति नौनिधि।

सोरठा :– एक उदाहरण दृष्टव्य है :–

एरी सखी प्रगटे कृष्ण मुरारी, बृज आनंद दधि कांदौ आंगन नंद के। टेक।
भवन भीर ब्रज नारि, पूत भयौ ब्रजराज के।
बन ठन कै सब बाम, बसननि साजि सजि कै गई।
रोहिनी अति बड़ भाग, आदर दै भीतर लई।।
बिछुवन की झनकार, गलिन गलित अति हवै रही।
हाथन कंचन थार, उर पर स्रमकन फब रही।

दोहा :– **राग–रायसो**

कनक कलस सुभ मांगलिक, भवन बीच धराइ।
ध्रुजा पताका तोरने, द्वारहि द्वार बंधाई ।।
जचक जुरि मिलि आवते, करत भबद उच्चार
पुहुप पृष्टि सुरपति करें, बोले जै जै कार।।
पदावली में अनेक पर कवित्त में लिखे गये हैं
वेद रटत ब्रह्म रटत, सुंभ रटत सेस रटत,
नारद सुक प्यास रटत, पावत नाहि पार री
ध्रुव जन प्रहलाद रटत कुंती के कुवंर रटत,
द्रुपद सुता रत नाथन प्रतिपार री
गानिका गज गीध रटत सुतन दै दै प्यार री।
नन्ददास श्री गोपल गिरिविर घर रूप जान
जसुदा को कुंवर लाल राधा–डर–हार री।

सवैया :– इसका एक उदाहरण दृष्टव्य है:–

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 1, Issue 02, June-Dec 2018

सुन्दर मुख पै वारन की मृत्यु कौना,

खजंन नैननि, अंजन सोहै, भौंह सुबंक लोचन अति लौन।

तिरक्षि चितवन यों छबि लागै कंज दलन पाले अढ़ि छौना जो छवि है वृषभानु सुता में सो छबि नाहिं लखी मै सोना नन्ददास अबिचल यह जोरी, राधा रानी स्याम सलौना।

इस प्रकार हम निष्कर्ष पर पहुँचते है कि अष्टछाप कवियों ने छान्दिक निर्वाह विशेषज्ञता के साथ किया है। संगीत से सामंजस्य के लिये उन्होने जिस प्रकार वर्ण, मात्रा और लय की मैत्री स्थापित की है, वैसा अन्यत्र दुर्लभ है। वास्तविक अर्थो में अष्टछाप के काव्य दन्द एंव संगीत एक दूसरे के पूरक है। पद और गान का ऐसा समवेत मुहावरा अष्टाछाप ने दिया है कि वह युगों तक परिवर्तित संगीत वृत्तियों के अन्दर विद्यमान है। संगीत एवं काव्य उपमानों के आधार पर अनुशीलन से विदित होता है कि संगीत की सभी शास्त्रोक्त विशेषताओं एवं अनिवार्य गुणों की कसौटी पर अष्टछाप कवि खरे। साथ ही साथ काव्य गुणों के भी मर्मज्ञ थे।

इस प्रकार हम देखते हैं कि अष्टछाप कवियों के काब्य में संगीत तत्वों का निर्वाह पूर्णरूपेण हुआ है। इनका संगीत पक्ष परिपक्वता लिये हुये है। रागधर्मी छन्द रचना, पदों में शास्त्रोक्त गायन कीं सीमाओं का भावानुरूप निर्वाह, पदों में राग–रागिनी, ताल, नृत्य तथा मृदंग के बोलों के प्रयोग का आनुपातिक निर्देश आदि सब कुछ सर्वदा पुष्ट एवं परिष्कृत है।

सन्दर्भ सूची

1. नन्ददास, पृ0 326, पद 9, अन्य उदाहरण, पद 26, 26 186
2. नन्ददास, पृ0 327, पद 13, अन्य उदा0, पद 31, 186
3. नन्ददास, पृ0 331, पद 24
4. नन्ददास, पृ0 33, पद 27
5. ब्रजभाषा के कृष्ण–भक्ति काव्य में अभिव्यंजना–शितप, डा0 सावित्री सिन्हा, पृ0 416
6. अन्य उदाहरण, पद 6, 12, 32, 34, 35, 36, 40, 41, 47, 50, 55, 70, 72, 80, 81, 83, 97, 99, 100, 101, 108, 103, 116, 119
7. नन्ददास, पृ0 348, पद 66